VIDEO Play

AUDIO

भजन

तर्ज–आपकी नजरों ने समझा प्यार के काबिल

आपकी मेहर ने हमको आपके काबिल किया,
मूलतन हमरे जहां पर अर्श वो हासिल किया
1– आ गए हैं याद रूह को पख पच्चीसों धाम के,
भोम पांचवीं सुख पौढ़न के लेना श्यामा श्याम के
भोम तीसरी बैठकर के सींचते अमीरस पिया
2– रूहों का रस रंग में मग्न हो पाट घाट में झीलना,
और वनों में अपने प्यारे पिऊजी के संग विलसना
दिल में प्रीतम के हैं रूहें और रूहों के दिल पिया
3–खड़ोकली में झीलना और भुलभुलवनी में दौड़ना
और कभी हमसब का मिलकर लाल चबूतरे बैठना
बीच हम रूहों के बैठे हैं सरूप युगल पिया
4– घूमने जाना कहां ये पूछना श्री राज का,
और फिर रूहों से हंसकर बोलना वो सुभान का
हमने चाहा था जहां जाना वहीं लियें चल पिया
5– देखूं श्री पुखराज जी से निकलती श्री जमुना जी,
और दक्षिण दिश को मुड़कर हौजकौसर में मिली
बेशुमार हैं अर्श अपना कहूं भला कहां तक पिया